चाहिये कि वर्तमान लोक खराबियों का सुधार करने के लिये अपने जीवन धन गृहस्थादि से मोह न करते हुवे लोकोपकार के लिये यत्नशील हों। और सच्चा उपकार सुधार प्रचार करके दिखावें, और सुयश लेवें।

उपकारी हितकर मनुष्यों जीवों बातों का यदि रक्षण पोषण न हो और उनकी सेवा सहायता न हो, तथा हानिकर और दुःखकर मनुष्यों जीवों वातों का दमन प्रतिकार न हो तो कैसे लोकोपकार हो। अतः उपकारी हितकर भूत भावों का परित्राण रक्षण होने के लिये और हानिकर दुःखकारी भूत भावों का दमन प्रतिकार होने में लोगों को सहयोग सहायता देना और धन व जीवन लगाना चाहिये। तभी यथार्थ कल्याण होगा।

लोगों की कितनी भूल, ना समझी और अविवेकता रहती है कि सच्चे पूजा के योग्य माता पिता और लोकोपकारी सज्जनों गुरुवों तथा सत्कार्यों का तो निरादर होता है। अपुज्यों की पूजा होती है और बुरे कामों में धन और जीवन लगता है। झूठे मायाचारी और अपात्र मोज उड़ाते हैं तथा सच्चे सदाचारी सद्पात्र दुःख पाते हैं। लोगों की ऐसी गलत व्योहारिकता प्राय करके अनुभव करने में आती है कि माता पिता शिक्षक लोकपकारी गुरु सज्जनादि पूजने योग्य जनों से उनके जीवन काल में बेवफाई का दुर्वर्ताव होता है चाहे मरणोंपरान्त उनके श्राद्ध किये जाते हैं और निशान स्थानादि पूजे जाते हैं। यह गलती की बात है। पूज्यजनों की उनके जीवन काल में भी इज्जत और खिदमत होनी चाहिये। जीवित व चैतन्य पूजनीय जनों की पूजा से ही सच्चा लाभ है। तथा सद्पात्रों द्वारा संचालित सार्वजनिक संस्थावों और लोक हितेषि कामों के लिये भी स्वयं उपयुक्त सहायता करना चाहिये।

तथा च, सत्यवादि, कुलीन गृहस्थ, गुणि, बुद्धिमान, श्रेष्ठजन, श्रोर बन्धु मित्र सम्बन्धि श्रादि स्वजन लोग भी तँगी होते हुवे सहसा नहीं मांगा करते हैं। ऐसे जनों की किसी वृत्ति व्यवसाय तरीके से स्वयं सहायता करनी चाहिये। कारण कि स्वजनों श्रोर श्रेष्ठजनों की श्रापत्ति में सहायता करना कर्तव्य है।

दुनियां रूपी बाग में अच्छे हितकर श्रौर काम के पोदों का पालन पोषण श्रौर रक्षण करना चाहिये तभी यथार्थ लाभ है। निकम्मे, कंटकारि रूप, हानिकर श्रौर भार रूप पोदों के पालन पोषण रक्षण से क्या लाभ। उपकारी श्रौर पात्रों के प्रति दान दया क्षमा करनी चाहिये अपात्रों के प्रति नहीं।

जहां व्यसनों स्वादों, प्रमादों, भोगों, राजसिक, प्रपंचों अपात्रों अकार्यों के प्रति बढ़ कर धन व जीवन लगा दिये जाते हैं वहां उपकार प्रचार सुधार सत्पात्रों सत्कार्यों श्रौर ठीक धर्म पालन के प्रति यदि थोड़ा भी धन श्रौर जीवन लगाया जावे तो विशेष उपकार हो। धर्म अर्थ काम श्रौर मुक्ति चारों सिद्ध हों।

लोक में वर्ण श्रौर जाति भेद के बारे में बड़ी गलत फहमी होती है। जानना चाहिये कि गुण कर्म लक्षण स्वभाव करके मनुष्य मात्र व्यापि चतुरवर्णी कल्पित हुई थी। लोक शिक्षण के लिये विद्वान बुद्धिमान लोग, रक्षण के लिये शूरवीर, नीतिज्ञ लोग, पोषण के लिये अर्थ विशेष व्यवसाई लोग श्रौर तीनों की सेवा सहायता के लिये परिश्रमी लोग व्यवस्थित हुवे थे। सो ब्राह्मण, क्षत्रिय- वैश्य, शूद्र कल्पित हुवे। तथा जन्म वृत्ति व्यवसाय संग करके जाति कल्पित हुई। वर्ण चार हैं श्रौर जाति अनेक हैं। आजकल लोक व्योहार में जाति व्यवस्था प्रचलित है। लोगों को वर्ण श्रौर जाति को अपने २ रूप में ठीक मानना चाहिये। गुण कर्म लक्षण स्वभाव करके वर्ण मानना

चाहिये और जन्मादि करके जाति मानना चाहिये। तथा च धर्म प्रबन्ध विगड़ जाने से आज कल अपात्र मायाचारि और अकुलीन लोग श्रेष्ठ और उत्तम नाम रूप चिन्ह भेषादि धारण करके भोले और धर्म अनभिज्ञ लोगों की नजरों में श्रेष्ठ बने हुवे पूजा पा रहे हैं। और सद्पात्र लोग भेषादि का दुरुपयोग होने से भेषादि धारण ना करते हुवे अपूजा पा रहे हैं। लोगों को विवेक विचार परिक्षा पहिचान युक्त धर्म कथित और व्यवस्थित मर्यादा के अनुसार नाम रूप चिन्ह भेषादि के भरम में न पड़कर लक्षणादि से जो जैसा हो उसको वैसा जानना और मानना चाहिये। साधुवों की व्यवस्था पर्मार्थ परोपकार के लिये हुई थी अतः परोपकारी पर्मार्थियों को ही साधु जानना मानना चाहिये, चाहे किसी भेषादि करके हों या न हों।

तदन्तर, भगवान मनु व रामादि अवतारों द्वारा व्यवस्थित व आचरित मर्यादा व्योहार का ठीक पालन करना चाहिये। परम्परागत श्रेष्ट जनों द्वारा आचरित सदाचार का पालन करना चाहिये। चौरी, जोरी, जारी, विश्वासघात, जुलम आदि कुकर्मों को नहीं करना चाहिये। जूवा, फाटका, शराब, दड़ा, उधारबाजी, रंडी बाजी, फजूल खर्ची, मुफ्तखोरी, भोगबिलासिता आदि दुर्व्यसनों से बचना चाहिये। मेहनती और कर्तव्यशील जीवन बिताना चाहिये। खान, पान, पहनाव, रिहायश, रीति, रिवाजादि अपनी जीवन शैली सादा और सामान्य रखना चाहिये। जो अपने लिये हितकर और निभाऊ हो। दूसरों के लिये हानिकर दुःखकर और खटकनीय न हो। अनिन्दनीय और लोकप्रिय जीवन बिताना चाहिये। अधिक फैशन प्रपंच प्रमादों में न पड़कर मुनासिब जरूरियात पूरी करना चाहिये। दूसरों के स्त्री, सन्तति, सम्पत्ति, सन्मानादि पर बदनीयती नहीं करना और कुढ़ना जलना नहीं चाहिये। अपने लिये यत्नशील होना और हर हालत में सन्तुष्ट रहना चाहिये। जीवन सुख दुःख मिश्रित

होता है, सुख में इठलाना और दुख में घबराना नहीं चाहिये। धीरता, गम्भीरता, सहनशीलता समता आदि सद्गुणों का साधन करना चाहिये। अपने समान ही दूसरों के दुःख दरिद्रता आदि को समझते हुवे दूसरों से सहानुभूति रखना चाहिये। स्वजनों से हमदरदी और परजनों से अद्रोह रखना चाहिये। उपकारी और पात्र दीन हीनों के प्रति दया दान और क्षमा करना चाहिये। सुसंग और सुसाहित्य को सेवन करना तथा कुसंग और कुसाहित्य से बचना चाहिये। वचन बोल बतलाव, प्रिय हितकर निष्कपट और अखटकनीय करना चाहिये। सब के साथ यथा योग्य यथार्थ और सभ्य बर्ताव करना चाहिये। माता पिता शिक्षक गुरु स्वामि ज्येष्ठ बन्धु राजा उपकारी अतिथि बुद्धिमानों वृद्धजनों की इज्जत खिदमत करना चाहिये। स्त्री, पुत्रगण छोटे भाई, सेवक सुहृद शिष्य आश्रित व अनुजगणों का पोषण, रक्षण और नियमन करना चाहिये। मित्र, नाति, गोति, संबंधी, पड़ोसी, सहव्यवसाई आदि सामान्यजनों से सहानुभूति और बराबरी का बर्ताव करना चाहिये। अन्यजनों से जो गुण कर्म लक्षण स्वभाव धन बल वृत्ति व्यवसाय आदि से जैसा हो उसके साथ तैसा बर्ताव करना चाहिये। हितैषियों, उपकारियों सज्जनों के साथ सज्जनता का बर्ताव करना चाहिये। हानिकरों, दुःखकरों दुर्जनों, मायाचार्यों के साथ असज्जनता का बर्ताव करने में दोष नहीं। अपने साथ दुर्बर्ताव करे उसके बचाव और जबाब में दुर्बर्ताव करना दोष नहीं। श्रेष्ठजनों की भान्ति शोभात्मक रूप में एहसानों उपकारों का बदला देना और जुलमों पापों का बदला लेना वाजिब है। चाहे कभी और किसी रूप में हो। सद्बदला और प्रत्युपकार नीति के ठीक पालन से सद्व्योहारिकता बढ़ती है और दुर्व्योहारिकता घटती है। भूल भ्रम और क्षुद्र व क्षम्य बातें क्षमा योग्य होती हैं। अपनी कुली-

नता गौरव अर्थ व्यवसाय और जीवन की आपत्ति में रक्षा करना चाहिये । गुणि, बुद्धिमानों और कलाकारों की कदर करनी चाहिये । स्वजनों से सहसा विगाड़ नहीं करना बल्कि निभाना चाहिये । मायावी धोके बाजों से बचना चाहिये। लोकसंग्रह ठीक बना रहने के लिये अच्छा बुरा जो जैसा कर्म करे उसका लोक संग्रहात्मक रूप में ठीक फल उसको शासनों, शक्तिशालियों बुद्धिमानों द्वारा मिलना चाहिये । कि सद् कर्म-फल और प्रत्युप-कार पर ही लोक व्यवहार अवलंबित है । उधार, और वायदे के व्योपार से बचना चाहिये । सचाई सफाई का व्योपार व्यवसाय करना चाहिये । ऋण नहीं चढाना चाहिये । बेइमानी व कपट का व्यवसाय नहीं करना चाहिये और अपना व्यवसाइक विश्वास नहीं बिगड़ने देना चाहिये । अविन्दनीय अखटकनीय प्रिय वृत्ति व्यवसाय उपायों से धन कमाना, युक्ति युक्त खाना खर्चना और उपकारी पात्रों और सदकार्यों के प्रति लगाना चाहिये । द्रव्य का उपयुक्त संग्रह करना चाहिये कि आपत्ति में काम आवे अनुचित संग्रह से क्या लाभ । द्रव्य, कमाने स्वयं युक्ति युक्त खाने, स्वजनों को उचित तरीके से खिलाने और उपकारी परजनों और सद्कार्यों के प्रति उचित तरीके से देने के लिये होता है । ना कोई साथ लाया और ना कोई ले जावे । धन के वाफिर होते हुवे लोकोपकारी जनों और सद् कामों के प्रति न लगाना नीचता है तथा ऋण चढ़ा कर खर्चना और देना दुःख दाई है । आदि पुरुष, त्रिलोकिपति, ज्योतिरूप, चैतन्य देव प्रत्यक्ष परमेश्वर भास्कराचार्य भगवान् सूर्य जिनको साम्प्रदायक भेद से ब्रह्मा विष्णु शिवादि के नाम से माना गया है उन्ही अद्वि-तीय चैतन्य प्रभु की पूजा उपासना करना चाहिये । उसी से

लाभ है। तथा उसके अवतारों आत्मीयों पठाये हुवों और अनुकर्णी अनुयायी देवतावों महापुरुषों में उनके वचनों व्यवस्थावों चरित्रों में श्रद्धा और विश्वास रखना चाहिये। देश काल परिस्थिति पात्रादिनुसार जैसा आहार व्योहार कर्तव्य कर्मादि करना उनके द्वारा व्यवस्थित और व्योहारित किया गया सो ठीक रूप में पालन करना चाहिये। आपस में मेल मोहब्बत सचाई रफाई वफादारी सुमति रखना और विश्वास पात्र रहना चाहिये। विश्वासघात नहीं करना चाहिये और कोई ऐसी चेष्टा नहीं करनी चाहिये जिससे आपस का विश्वास और इतफाक बिगड़े। अपने २ कर्तव्य कर्म धर्म मर्यादा कायदा वृत्ति व्यवसायादि का ठीक पालन व साधन करते हुवे शरीर रचना की तरह सुव्यवस्थित और माला की भान्ति सुसंगठित रहना चाहिये। सनातन, जैन, बुद्ध, सिक्ख, पारसी, यहूदि, इसाई, इसलामादि सभी धर्मों और लोगों को जो कि सभ्यता सदाचार और लोक, परलोक और ईश्वरादि, महापुरुषों को मानते हैं उनको आस्तिक जानते हुवे द्वेष नहीं करना चाहिये। दुर्जनों दुराचार्य्यों और अनुचित लोभ प्रमदादि में पड़ कर घृणित व निन्दनीय लोक दुःखकर कर्म करने वालों को हि नास्तिक राक्षस व घृणा योग्य मानना चाहिये। अपना मानसिक और शारीरिक हित हो, आपस में उपकार हो और लोक का संग्रह ठीक बना रहे प्रायः भले लोग अमन और आसूदगी से जीवन निर्वाह करें यही ईश्वर और धर्म का उद्देश्य है इसलिये देशकाल परिस्थिति पात्रादि अनुसार विवेक विचार युक्त वैसा आहार व्योहारादि करना हि धर्म का सद्रूप है। लोग आज मनमाना धर्म समझने और पालने लगे हैं इसीलिये यथार्थ कल्याण नहीं होता। अवतारों और महापुरुषों द्वारा देश काल परिस्थिति पात्रादि अनुसार आचरित और व्योहारित शैलि हि

धर्म का सच्चा रूप है। स्त्रियों के लिये स्वेच्छाचारि न होकर सब प्रकार अपने पति के अनुकूल रहना हि परम धर्म है। सत्यता सज्जनता सुकर्मों और हितकर उपकारी मनुष्यों जीवों मर्यादावों और बातों के पालन प्रचार से सार्वजनिक हित होता है और लोक का संग्रह ठीक रहता है अतः सत्यता सज्जनता सुकर्मों और हितकर उपकारी मनुष्यों मर्यादावों व बातों का पालन प्रचार और परित्राण करना चाहिये। मायाचारिता दुर्जनता कुकर्मों और हानिकर दुःखकर मनुष्यों जीवों मर्यादावों व बातों का दमन और प्रतिकार करना चाहिये। लोक संग्रहात्मक कामों में सब को सहयोगि और सहायक होना चाहिये। मनमानी राह न चल कर तजरबाकार लोकोपकारी सच्चरित्र आस्तिक बुद्धिमान, देश काल परिस्थिति पात्रादि अनुसार जैसा आचार व्यवहारादि बतावें सो करना चाहिये। लोकनिन्दनीय व खटकनीय जीवन से बचना चाहिये। लोक शोभात्मक व लोक प्रिय जीवन साधन करना चाहिये। अपने लिये हितकर, पारस्परिक हितकर और लोक संग्रहात्मक जीवन साधन करना चाहिये। आत्म रक्षण और लोक संग्रह लोकोपकार के निमित्त जो मजबूरन अपकर्म किया जावे सो क्षम्य होता है। आलस्य प्रमाद रहित अपना कर्तव्य धर्म ठीक पालना चाहिये।

तदोपरान्त, वर्तमान काल में, फैशनबाजी, मायाचार, मुफ्तखोरी, मंगतापन, स्वेच्छाचारिता, भोगविलास, व्यसन प्रमाद, रिश्वतखोरी, ऋणकारी, व्याज खोरी, किराये, लगान, झूंठ, कपट, बेइमानी, फजूलखर्ची, सट्टा, फाटका, दड़ा, जूवा,

शराब, चालबाज़ी प्रतिद्वंद्विता आदि जो हानिकर बातें बढ़ गई हैं उनका दमन प्रतिकार करना चाहिये। और सच्चरित्रता, सचाई, लेन देन व्योपार की सफाई, कर्तव्यशीलता, मर्यादा पालन, सादा व सामान्य रहन सहन, पारस्परिक मेल हमदर्दी, हकपरस्ती आदि जो हितकर बातें घट गई हैं उनको बढ़ाना चाहिये। और लोक को हितकर यथायोग्य यथार्थ तथा साम्यावस्था में लाना चाहिये।

खेद है कि एक तरफ तो शहरी जनता बलवानों और धनिकों के लिये, पानी के नल, सड़कें, तार, बिजली, मोटरादि सवारियां, टेलीफोन, रेडियो तरह तरह के खान पान पहनाव मकान ऐश आराम के सामाना और साधन बने हुवे हैं, दूसरी तरफ ग्रामों की प्रजा परिश्रमी कृषकों और निर्बल लोगों के लिये भर पेट भोजन मिलना भी कठिन होता जारहा है हालांकि सब सुख स्वाद, अर्थ की उपज करने वाले किसानों परिश्रमियों और निर्बलों के खून पसीने से बनते हैं। एक तरफ के कर्मचारी लोग बड़ी बड़ी तनखाहें पाते हैं और ऊपर से रिश्वत उड़ाते हैं और व्यसनों प्रमादों में धन उड़ाते हैं तथा दूसरी तरफ के मुलाज़मों मज़दूरों के लिये गृहस्थ निर्वाह भी नहीं हो पाता। मायाचारी और अपात्र लोग मौजें उड़ा रहे हैं और साध्वाचारी सुपात्र लोग रोटियों से तंग आरहे हैं।

ज़ाहिरदारी बढ़ी हुई है और बातनदारी कलुषित हो रही है। संगठित और चालपूर्ण व्यवसाय व्योपार वाले धन कमा रहे हैं और व्यक्तिगत तथा निश्छल कला कारीगरी और दुकानदारी

वाले जिल्लत उठा रहे हैं। अदालती इलमदान लोग कोठियां व बँगले झुकाये हुवे हैं और बंकों में पूँजियां जमा कराये हुवे हैं तथा पब्लिक लिखे पढ़े लोग अजीविका योग्य नोकरियां भी नहीं पा रहे हैं। हकूमतें द्रव्य को पानी की तरह वहा रही हैं तथा रइयत अर्थ के लिये तलमला रही है। रईस और सम्पत्ति-शालि लोग व्यसनों प्रमादों फजूलखर्चियों में धन उड़ा रहे हैं तथा गरीब गृहस्थियों का जीवन निर्वाह भी नहीं होता है। भेद नीति वाले राज्य कर रहे हैं और सरलता वाले दुःख भर रहे हैं। चालाकी बेइमानी का दौर दौर है सचाई इमानदारी निज़ोर इतनी अनुचित विषमता से लोक का निभाव होना और शान्ति होना कठिन है। लोकोपकारी बुद्धिमानों को जनता को करीबन साम्यावस्था में लाना चाहिये कि प्रायः सब लोग अमन और आसूदगी से जीवन बिता सकें। मेहनती, कर्तव्यशील, मर्यादित सादगी सामान्यता इमानदारी का और साध्वाचारी जीवन छोड़कर लोग ऐशो आरामपरस्ती, कर्तव्य हीनता, उछ्रृखंलता, प्रमाद, विषमता बेइमानी और मायाचारिता के जीवन की तरफ बढ़ते जारहे हैं। इसका नतीजा बड़ा दुःखदाई निकलता जान पड़ता है। लोगों को ऐशोआराम परस्ती मायावाद प्रपंच व प्रमाद विशेष अनुचित जीवन को छोड़कर, मेहनती, तकलीफ सहन करने वाला, स्वावलंबी, कर्तव्य शील, मर्यादित, जरूरत पूरी करने वाला, सादगी, सामान्यता और इमानदारी का जीवन साधन करना चाहिये। कुकर्मों से तोबाह करते हुवे सुकर्मों का साधन करना चाहिये। लोक सुधार के लिये भग-

वान कल्कि का अवतरण हो चुका है सो अन्यथा लोग कुकर्मों पापों के लिये सख्त दण्ड और दुःख पावेंगे।

धार्मिक तथा लोकोपकारी बातों के प्रति हितैषी से जो सद्भावना युक्त जिस प्रकार का विचार परामर्श करना चाहें सो सहर्ष कर सकते हैं।

उप्रोक्त बातों का ठीक मनन पालन करने वाले लोग भगवान् कल्कि के प्यारे होंगे और लोक परलोक में सुख शान्ति ऐश्वर्य व मुक्ति पावेंगे।

हमारे यहां से लोकोपकारार्थ, **गीतासूर्य प्रकाश, ज्ञान सूर्य प्रकाश, कल्कि संदेश, सूचना चेतावनी** आदि कई ग्रन्थ प्रकाशित और मुफ्त वितर्ण किये गये हैं। और कई अप्रकाशित हैं जिनको सुअवसर प्राप्त होने पर प्रकाशित किया जावेगा। पोस्टेज प्राप्त होने पर प्रकाशित ग्रन्थ भेज दिये जाते हैं। जिन सज्जनों के प्रचार कार्य के लिये सहायता प्राप्त हुई उनका धन्यवाद।

हितैषि,

सूरजमल पेड़ीवाल।

सूर्य प्रकाश प्रचार कार्यालय

मु० फाज़िलका (पंजाब)

श्री गीता महिमा

धन धन प्रभु तव महिमा अपार, भगवान कृष्ण अवतार लिया।
अर्जुन को गीता ज्ञान सुना, कलि जीवों का उपकार किया ॥१॥

श्रीकृष्ण प्रभु को नमस्कार, अज्ञान तिमिर जिन नाश किया।
भवरूप समुद्र उतरने को, गीता का ज्ञान प्रकाश किया ॥२॥

गीता की महिमा अपार है, मानुष क्या भला बतावेंगे।
ज्ञानी ध्यानी अरु ऋषी मुनि, गुणगावत शेष थकावेंगे ॥३॥

गीता पढ़ने वाला योगी, निश्चय ऊंचा पद पावेगा।
अभ्यास कर्म करते करते, सो ब्रह्मरूप हो जावेगा ॥४॥

गीता की कथा वारता को, जो नहीं सुनत या पढ़ता है।
है व्यर्थ जन्म नर तन उसका, सो पशु सम जगत विचरता है ॥५

जो नर सोवत जागत चलते, बैठा या भोजन खाता है।
गीता का अर्थ विचारत है, सो मुक्ती पद को पाता है ॥६॥

जिसने गीता को समझ लिया, सो सब शास्त्रों का ज्ञाता है।
सब धर्म अर्थ अरु काम मोक्ष, तिन की सिद्धि को पाता है ॥७॥

जिमि जलते दीपक पर पतंग, जल भस्म भूत हो जाते हैं।
गीता ज्ञानी के कर्म नशे नहिं, द्वंदव उसे सताते हैं ॥८॥

जिसने गीता पर अमल किया, बस उसको दिव्य पुरुष मानो।
व्रत तीर्थ तप अरु दान पुण्य, सब उसके किये भये जानो ॥९॥

मद काम क्रोध अरु लोभ मोह, इर्षा अरु रागद्वेष जेते।
जिस ठौर बास हो गीता का, तिस ठौर वास यह नहि लेते ॥१०

गीता रूपी अमृत प्याला जो, सज्जन नित उठ पान करें।
सो निश्चय ब्रह्म रूप होंगे जो, भक्तीयुत प्रभु ध्यान धरें ॥११॥

गीता गंगा अरु गायत्री, कल्याण जगत का करती हैं।
बुद्धी शरीर मन शुद्ध करें, कलिमल पापों को हरती हैं ॥१२॥

गीता सेवन वाला योगी, चाहे अधम नीच अन्याई हो।
वह अवश्य तरि है भवसिन्धु, जिन हरि से प्रीत लगाई हो॥१३॥
भगवान कृष्ण मुख से वर्णित, गीता अमृत समवानी है।
वेदों शास्त्रों उपनिषदों का, है सार तत्व लासानी है॥१४॥
जिसके हिय गीता ज्ञान बसे, भगवत में ध्यान लगाता है।
सो सुख दुख भ्रम भय हार जीत, द्वन्दों से नहिं घबराता है॥१६
गीता का ज्ञानी स्वतन्त्र है, सब करत नहीं कुछ करता है।
जल कंवल पुष्प सम अलिप्त है, जगबन्धन में नहिं पड़ता है॥१७॥
श्री गीता को जो श्रवण पठन, अरु मनन सर्वदा करते हैं।
श्रीकृष्ण कहत हैं भक्तों के सब, काम स्वयम ही सरते हैं॥१८॥
गज हेम अन्न गौ प्राण वस्त्र, भू कन्यादान कहाते हैं।
सब से उत्तम है ज्ञान दान, गीता का विज्ञ बताते हैं॥२०॥
पूरी आधी या चौथाई, अध्याय नित्य जो सुने पढ़े।
अथवा नियमित नव दश श्लोक, ध्यावे सो दिन दिन उच्च चढ़े।
जो अन्त समय दृढ़चित होकर, गीता को सुने उचारेगा।
पापी हो तो भी मुक्ति लहै, जो गीता ज्ञान विचारेगा॥२२॥
पीड़ित हताश दुखिया निराश, उद्योगिन का भी सहारा है।
विद्वानों के अघ छेदन को, गीता का ज्ञान कुठारा है॥२३॥
निर्पक्ष बचन हैं गीता के सब, देश जाति अस जानत हैं।
कर्मी धर्मी हरि भक्त ज्ञानि, गीता को उत्तम मानत हैं॥२४॥
धन सुत स्त्री आदि विषयानन्द से ब्रह्मानन्द बड़ा जानो।
सो ब्रह्मानन्द दिखाने को, गीता को ही आश्रय मानो॥२५॥
सद्चरित्र ज्ञाता सम बुद्धी, स्वारथ मद मोह विसारा है।
सूरज ऐसे ज्ञानी गुरु को, पुनि पुनि प्रणाम हमारा है॥२७॥